

---

# Shri Ramakrishna Stotram

---

## श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Shri Ramakrishna Stotram

File name : rAmakRRiShNastotram7.itx

Category : deities\_misc, gurudev, rAmakRiShNa, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Author : Ashutoshatirtha

Proofread by : Aruna Narayanan

Description-comments : rAmakRiShNastotramALA, stavanAnjali

Acknowledge-Permission: Ramakrishna Shivananda Mission, Varasat

Latest update : June 12, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्



दीनानाथः सदानन्दो भ्राजमानो स्वतेजसा ।  
कलिदोष समाक्रान्त समुद्धरण वाञ्छया ॥ १ ॥  
महाशक्तिं समाश्रित्य त्वमागतो निजेच्छया ।  
नमोऽस्तु गुरवे तुभ्यं रामकृष्ण स्वरूपिणे ॥ २ ॥  
यो रामः स हि कृष्णस्तु त्वय्यभेदः प्रदृश्यते ।  
लोकशिक्षा प्रदानार्थमागतस्त्वं महीतले ॥ ३ ॥  
करुणार्णव भो देव ! गृहाण प्रणताञ्जलिम् ।  
नास्त्यस्माकं धनं किञ्चित् तुभ्यं यद्दीयते पुनः ॥ ४ ॥  
विष्णवे रामकृष्णाय रामकृष्णाय विष्णवे ।  
नमस्तुभ्यमभेदात्मन् पुनः पुनर्नमो नमः ॥ ५ ॥  
अहो तवायं महिमा महात्मन्,  
समग्रलोके सदया हि दृष्टिः ।  
रूपं तवेदं करुणार्द्रचित्तं  
रजस्तमोनाशकरं जनानाम् ॥ ६ ॥  
इच्छास्माकं तव चरणयोः सन्निपातो महात्मन्,  
संसाराब्धेस्तरणकरणं रामकृष्णारव्य देव ! ।  
किन्वेतेषामति गुरुतरं मानसं शत्रुपक्षं  
शीघ्रं नो भो शमय शमय प्रार्थना नेष्टमन्यत् ॥ ७ ॥  
हे योगिंस्त्वं परमपुरुषो दृश्यसे सुप्रसन्नो  
निष्पन्दं ते नयनयुगलं पश्यतामाशु भक्तिम् ।  
सम्मूढानां जनयति मुहुः किं पुनः सात्त्विकानां  
स त्वं मुक्तो नयनपथगो रामकृष्णोह्यमीषाम् ॥ ८ ॥  
हे रामकृष्ण ! युक्तात्मन् ! वामाङ्गं प्रकृतिस्तव ।

साऽपि योगविशुद्धात्मा शारदानामधारिणी ॥ ९ ॥

युवयोर्दृष्टिमात्रेण भक्तिरव्यभिचारिणी ।

जायते प्रार्थनाऽस्माकं साधवी स्यान्मनो गतिः ॥ १० ॥

मातः! पूज्या जगति सकलैर्भर्तृपादेवसन्ती

नित्यध्याना पतिगतमनाः शान्तशुद्धस्वभावा ।

धन्यास्मिस्त्वं करणनियमाज् ज्ञायसे देवतैव

आद्या माता जनहितकारी रामकृष्णेन सार्धम् ॥ ११ ॥

रचितमाशुतोषेन श्रीमता भक्तिसाधकम् ।


सङ्घौकादश मात्रेण श्लोकस्तोत्रमिदं स्मृतम् ॥

इति पण्डित आशुतोषकाव्य-व्याकरण-स्मृतितीर्थ विरचितं


“श्रीरामकृष्ण स्तोत्रम्” सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan

---

——  
*Shri Ramakrishna Stotram*

pdf was typeset on June 12, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

